राजधानी का सबसे गंदा नाला फिर बनेगा साहिबी नदी, बढ़ेगी शान

बेहद गंदे नजफगढ़ नाले की होगी सफाई, इसे रिवर फ्रंट बनाया जाएगा |

Poonam.Gaur@timesgroup.com

■ **नई दिल्ली :** राजधानी में पिछले कुछ दशकों के दौरान साहिबी नदी की पहचान नजफगढ़ नाले के तौर पर हो गई है। जो लोग 40 से 50 साल पुराने हैं वह जानते हैं कि साहिबी नदी अलवर से आकर नजफगढ़ से होते हुए सीधे यमुना में जाती थी। लेकिन, पिछले कुछ सालों में यह राजधानी का सबसे प्रदूषित नाला बन चुकी है। अब दिल्ली सरकार ने इस नाले को वापस साहिबी नदी के तौर पर पहचान दिलाने के प्रयास शुरू किए हैं। इस प्रोजेक्ट के लिए दिल्ली सरकार ने बजट में 705 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है।

नाला नहीं, नदी कहिए...

- दिल्ली सरकार ने बजट में इस प्रोजेक्ट के लिए 705 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा
- नाले को साफ करने के साथ-साथ दोनों तरफ सड़कों का भी होगा सौंदर्यीकरण

इस बजट से न सिर्फ नजफगढ़ नाले के जहरीले पानी को साफ किया जाएगा और उस पानी में जीवों को वापस लाने की कोशिशें होंगी, बल्कि इसके दोनों तरफ सड़कों का सौंदर्यीकरण भी होगा। मकसद है कि सबसे प्रदूषित नजफगढ़ ड्रेन आने वाले समय में रिवर फ्रंट बनकर उभरे और राजधानी का प्रमुख पर्यटन स्थल बने। इस नाले को तैरते टापू (फ्लोटिंग वेटलैंड) और फ्लोटिंग एयरेटर लगाकर साफ किया जाएगा। इन-सीटू सफाई का काम और दोनों तरफ सड़कों के सौंदर्यीकरण का काम भी साथ साथ शुरू होगा। गौरतलब है कि 1977 में इस नदी में बाढ़ भी आई थी। ढांसा बांध पर पानी का स्तर खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया था। आसपास के करीब 72 गांव और 33 अर्बन कॉलोनियों में बाढ़ का पानी भर गया था।

ऐसे साफ होगा दिल्ली का सबसे प्रदूषित नाला

अधिकारियों के अनुसार, नजफगढ़ नाले के अंदर बह रहे प्रदूषित पानी को 'तैरते टापू' की मदद से साफ किया जाएगा। इन तैरते टापू में ऐसे पेड़-पौधे लगे होते हैं तो पानी को प्राकृतिक तरीके से साफ करते हैं और उनमें ऑक्सिजन का स्तर बढ़ाते हैं। इस प्रक्रिया से पानी फिल्टर होने के साथ ट्रीट भी होता चला जाता है। अहम यह है कि एसटीपी के मुकाबले यह प्रक्रिया कम खर्चीली भी है। इससे पानी में डिजॉल्व ऑक्सिजन का स्तर भी सुधरता है जो पानी में रहने वाले जीवों के लिए अच्छा है। गंदे पानी की वजह से पानी में ऑक्सिजन की मात्रा कम हो जाती है। इसके अलावा फ्लोटिंग वेटलैंड से पानी में अच्छे माइक्रोब भी घुल जाते हैं। इस प्रक्रिया से पानी यमुना तक पहुंचने से पहले ही साफ हो जाएगा।

करीब 57 km है नजफगढ़ ड्रेन की लंबाई